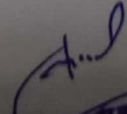


13.7.2015-

पत्रावली राजस्व लोक आदालत कैम्प दूबरा में पेश हुई उभय पक्ष उपस्थित। उभयपक्ष को सुना गया सायलान ने अपने प्रार्थना पत्र में कथन किया कि विवादित आराजी के 1/5 भाग में प्रतिवादी सं० 5 लगा० 9 सहखातेदार काश्तकार थे। तथा काबिज काश्त रहे। यही 1/5 भाग विवादित है। उक्त आराजी प्रतिवादी 5 लगा० 9 ने जरिये रजिस्टर्ड विक्रयपत्र दिनांक 15.07.1997 को 45000 की एवज में सायलान को विक्रय कर दिया तथा कब्जा अपने समान रोजे खरीद सायलान का प्रतिवादी 5 लगा० 9 ने करा दिया यह कब्जा सायलान का आज तक बदस्तूर चला आ रहा है। उक्त वयनामा के आधार पर सायलान ने विवाति भूमि का दाखिला खारिज खुलवाने हेतु पटवारी हल्का से सम्पर्क किया तब पटवारी हल्का ने बताया कि प्रतिवादी लगा० 9 ने विवादित भूमि को गैरसायल सं० 1 के पति व 2 लगायत 3 के पिता गुरुचरन, तथा प्रतिवादी सं० 4 के पिता वीरेन्द्रपाल को विक्रय कर दिया एवं पुनः वीरेन्द्रपाल ने अपने नाम वाली आराजी प्रतिवादी सं० 21 लगायत 23 के नाम विक्रय कर दिया जो वामुकाबले सायलान शून्य व प्रभावहीन है। जिनसे प्रतिवादी 1 लगायत 4 व 21 लगा० 23 को कोई अधिकार नहीं मिलते हैं। प्रतिवादीगण सं० 5 लगायत 9 को सायलान के पक्ष में निष्पादित विक्रय पत्र के बजूद में रहते हुये पुनः विक्रय करने का अधिकार नहीं था। जब सायलान ने गैरसायलान से विक्रय पत्र दिनांक 15.7.1997 के आधार पर दुरुस्त, व बंटवारा कराने का निवेदन किया तो साफ इन्कार हो गये। तथा इजहार किय कि गुरुचरन के स्थान पर अपने नाम दाखिला खारिज कराने के बाद विवादित आराजी को अतिशीघ्र विक्रय कर देंगे। यदि गैरसायलान ने अपने कथनों को अमलीजामा पहना दिया तो सायलान को अपरिमिति क्षति होगी। इसलिए गैरसायलान को अस्थाई निषेधाज्ञा से पाबंद किये जाने का निवेदन किया है।

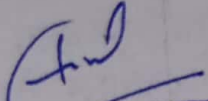
गैरसायलान को तलब किया गया गैरसायलान उपस्थित हुये और प्रार्थना पत्र का जबाव पेश कर कथन किया प्रतिवादी सं० 5 लगायत 9 ने सायलान के पक्ष में कोई विक्रय पत्र नहीं किया है तथाकथित विक्रयपत्र जाली व फर्जी है। वस्तुस्थिति यह है कि प्रतिवादी सं० 5 लगा० 9 ने विवादित आराजी का विक्रय दिनांक 22.6.1998 को उत्तरदाता के पूर्व पुरुष गुरुचरन के पक्ष जरिये पंजीकृत वयनामा कर दिया था। उसके बाद गुरुचरन उक्त आराजी पर खातेदार काश्तकार काबिज होकर काश्त करता रहा। सायलान को विवादित आराजी का गुरुचरन के पक्ष में होने की पूर्व में ही जानकारी थी तथा उसके जीवित रहते सायलान ने कोई आपत्ति पेश नहीं की और गुरुचरन खुलेआम काश्त करता रहा है। तथा सायलान ने गैरसायलान से कोई वार्तालाप नहीं किया है। सायलान जाली व फर्जी दस्तावेज के आधार पर उक्त आराजी को हडपना चाहता है। उसने यह दावा फर्जी दस्तावेजों के आधार पर किया है। इसलिए सायलान को अस्थाई निषेधाज्ञा से पाबंद किया जाने का निवेदन किया है।

हमने पत्रावली का अवलोकन किया तथा प्रस्तुत बहस का मनन किया प्रतिवादी सं० 5 लगायत 9 ने जरिये रजिस्टर्ड वयनामा दिनांक 15.7.97 को सायल के हक में किया गया मौके पर कब्जा प्रदान कर दिया गैरसायलान के अधिकार विक्रय के बाद समाप्त हो चुके थे। पुनः दिनांक 22.6.98 को प्रतिवादी सं० 5 लगायत 9 ने उत्तरदाता के पुरुष गुरुचरन के नाम कर दिया जब एक बार वयनामा कर चुके है तो

  
सहायक कलेक्टर मुख्यालय  
धौलपुर (राज.)

दुबारा वयनामा से उत्तरदाता के पूर्व पूरुष गुरुचरन को कोई अधिकार प्राप्त नहीं होते है वयनामा शून्य है सायलान पूर्व में कब्जा प्राप्त कर चुके थे वर्तमान में मौके पर सायलान का कब्जा है गैरसायलान के अधिकारो का निर्णय साक्ष्य में वादी मूल दावा में किया जावेगा। सायलान प्रथमदृष्टया केस व सुविधा का सन्तुलन साबित करने में सफल रहे है। अतः गैरसायलानों को अस्थायी निषेधाज्ञा से पाबन्द किया जाना हम उचित समझते है।

अतः आदेश है कि गैरसायलान विवादित आराजी खसरा नम्बर 609, 632, 708, 818, बाकै ग्राम दूबरा में रिकार्ड व मौके की यथार्थिती ताफैसला बनाये रखे। रहन, वय, मुन्तकिल न करें। पत्रावली फैसलशुमार होकर मूल दावा के साथ संलग्न रहे। आदेश सुनाया गया।

  
सहायक कमिश्नर मुख्यालय  
धौलपुर (राज०)